जीवनविद्या राष्ट्रीय सम्मेलन में नागराज जी से पूछे गये प्रश्न और समाधान

प्रश्न : समाधि के उपरांत 'संयम' किस प्रकार हुआ?

उत्तर : समाधि के पहले दो भूमियां बतायीं। धारणा, ध्यान और तीसरी स्थिति में समाधि है। 'धारणा' का मतलब 'किसी देश, काल, वस्तु की सीमा में चित्त वृत्तियों का निरोध होना।' 'तत् प्रत्येकान्तम् ध्यानम्' : उसके निश्चित बिंदु में यदि चित्त वृत्तियां निरोध होती हैं – उसका नाम दिया 'ध्यान'। 'तत्रार्थम् निर्भासम्' – ध्यान का जो अर्थ है – वह भर रहे स्वरूप शून्यमति समाधि: – और उसका स्वरूप कुछ न रहे, उसका नाम 'समाधि' दिया। ऐसा लिखा हुआ है पातंजलि योग सूत्र में।

ये तीनों चीजें एकत्र होने से 'संयम' है। संयम की जो प्रणाली (विभूतिपाद ग्रंथ में) बतायी थी – उसको बदला – अज्ञात को ज्ञात करने के लिए। उसी क्रम में अनुभव हुआ।

प्रश्न : क्या हर व्यक्ति को समाधि–संयम करना जरूरी है?

उत्तर : इसमें हमारा अंतिम निष्कर्ष यह है कि हर व्यक्ति संयम के लिए इच्छा तो कर सकता है। मुझको समाधि हुई है, समाधि को मैंने देखा है, समाधि के बाद संयम को देखा है – उसका फल भी हमारे पास है। इससे ज्यादा कुछ होता नहीं है – समाधि के बाद, वह हम पाये हैं। उसके बाद यदि आप हमसे पूछो कि 'हमको समाधि होगी या नहीं' – तो हम नहीं कह सकते हैं कि आपको समाधि होगी या नहीं। आपको समाधि होने की कामना ही मैं कर सकता हूं। मेरे गुरु जी भी वैसी कामना ही किये थे। हम नहीं कह सकते कि आपको समाधि होगी या नहीं। पहले यहां पर गिर पड़ते हैं। समाधि होने के लिए आपके पास कोई निश्चित मुद्दा न हो – 'आपको समाधि होगी' ऐसा हम recommend (सिफारिश) नहीं कर सकते। वह निश्चित मुद्दा पाना कितना सर्वजन के लिए सुलभ है – यह आप ही सोच लो। निश्चित मुद्दा – चाय/कॉफी पीने जैसा तो होता नहीं। जो अध्ययन में न आया हो – ऐसे मुद्दे को आपको तलाशना होगा। वह यदि हो पाता है – तब हम कहेंगे – 'समाधि संभव है' और 'संयम' भी संभव है।

प्रश्न : आपने अपने जीवन के ८०–९० वर्ष इसमें लगाये, क्या हमारे लिये कोई shortcut method (छोटी विधि) है?

उत्तर : shortcut method के लिए निवेदन किया है – 'अध्ययन'। अध्ययन और पठन के संदर्भ में हमने देखा – हर शब्द का अर्थ होता है, उस अर्थ के रूप में अस्तित्व में वस्तु होती है। वस्तु का बोध होने पर हमको समझ में आता है – इसे हम कहते हैं – अध्ययन।

जैसे 'पानी' एक शब्द है – और पानी एक वस्तु है। शब्द पानी नहीं है। यह आपके सामने है। उसी प्रकार हर शब्द के अर्थ में एक वस्तु होती है – वस्तु स्वयं सहअस्तित्व में होती है। अस्तित्व में वस्तु बोध होने से हम अध्ययन मानते हैं। वस्तु बोध नहीं होने से – उसको अध्ययन नहीं मानते हैं। यह मेरा निश्चय है। इसमें आप सहमत हो पाते हैं तो पहले पठन, उसकेबाद अध्ययन।

अध्ययन के लिए हमने परिभाषा–विधि उपक्रम प्रस्तुत किया। परिभाषा–विधि में हर वस्तु को परिभाषित करने पर वस्तुबोध होने की सुगमता बनेगी।

जैसे – 'धर्म' एक शब्द है। धर्म के बारे में धातु के आधार पर पहले यह बताया – 'धारयतेति सः धर्मः।' उसकी व्याख्या शंकराचार्य जी ने दी – वह ओढ़ने वाला है, पहनने वाला है – ऐसी व्याख्या दी। उसी के अनुसार गीता में भी कहा – सर्वधर्मान् परित्यज्या मामेकम् शरणम्रव्रज अंहम् त्वाम सर्वपापेभ्यो मोक्ष्येष्यामि माशुचा। इसका मतलब यह निकलता है – धर्म को त्यागा भी जा सकता है।

धर्म को हमने परिभाषित किया – 'जिससे जिसका विलगीकरण संभव न हो।' मानव का 'धर्म' सुख है। मानव जीकर के अपने धर्म को, सुखी होने के धर्म को, प्रमाणित कर सकता है। उसके लिए कहा – समाधान के साथ समृद्धि। मानव लक्ष्य में जीवन और शरीर दोनों का लक्ष्य समाहित है। जीवन में केवल जीवन के सुखी होने का ही लक्ष्य है। मानव में सुखी होने का भी लक्ष्य है और उसके साथ शरीर की आवश्यकता का भी लक्ष्य है। तो उस आधार पर कहा – समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण सहित मानव–लक्ष्य पूरा होता है। कैसे? संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के रूप में। अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित हो पाता है। हम यदि इस बात को अपनाते हैं, परंपरा बनाते हैं – एक अंखड समाज की रचना होगी।

समुदाय–चेतना में आदमी समस्या से मुक्ति पायेगा नहीं, ना पाया है। समुदाय–चेतना से एक भी आदमी समाधान पायेगा नहीं। अंततोगत्वा उन्हीं तीन भंवरों में जाना है – 'छल–कपट', 'दंभ–पांखड', 'द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध' और तीसरा 'साम–दाम–भेद–दंड' यह तो पहले से हमारे सिर पर मंडरा ही रहा है। तीन भंवर में से एक भंवर में तो हम फंसते ही हैं। उसका प्रमाण – आज तक एक भी ऐसा समुदाय नहीं हुआ जो सीमा–सुरक्षा से मुक्त होकर अपने समुदाय को सुरक्षित रखने की व्यवस्था दिया हो, समझा हो, समझाया हो। कोई ऐसा समुदाय नहीं हुआ। तो अखंड रूप में मानव समाज को पहचानना ही एक मात्र उपाए है। सर्वशुभ के लिए सोचेंगे तो यही रास्ता है। अध्ययन विधि ही इसका रास्ता है। अध्ययन के लिए पूरी वस्तु को रखा है। ■